# मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

# अभिनव तकनीक से मत्स्य पालन में अनूठी सफलता

**मत्स्य पालक का नाम :** श्री परवेज़ खाँन एवं शाहनवाजुल हक खाँन

**स्थान :** देवाँ फिश फार्म, ग्राम– मिश्रीपुर,
जाँहगीराबाद, जनपद– बाराबंकी।

**तकनीकी सहयोग :–** मत्स्य विभाग, उ0प्र0 एवं राष्ट्रीय मत्स्य अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।

## पृष्ठभूमि

श्री परवेज़ खाँ एवं श्री शाहनवाजुल हक खाँ, शिक्षित परन्तु ग्रामीण खेतिहर परिवार से है। स्वरोजगार की जिज्ञासा में स्वयं का ग्रामीण अंचल में लाभकारी व्यवसाय स्थापित करने को दृष्टिगत रखते हुए मत्स्य विभाग एवं राष्ट्रीय मत्स्य अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो के प्रयासों से मत्स्य पालन की ओर आकर्षित हुए। इनके द्वारा मत्स्य पालन का कार्य वर्ष 2008 में प्रारम्भ करने हेतु कृषि हेतु अनुपयोगी भूमि पर तालाब निर्माण ग्राम– सिपहिया, जनपद बाराबंकी में कराये गये। प्रथम चरण में 10 एकड़ भूमि पर तालाब बनाकर मत्स्य पालन कार्य प्रारम्भ किया गया था। प्रारम्भ में मिली सफलता से प्रेरित होकर 20 एकड़ और भूमि पर तालाब बनवाये इस प्रकार कुल 30 एकड़ भूमि पर तालाब निर्माण कर मत्स्य पालन का कार्य सफलता पूर्वक किया गया। नवनिर्मित तालाबों पर भारतीय प्रजाति के रोहू, कतला, नैन मछलियों का उत्पादन किया गया है। उत्तर प्रदेश में सामान्यता परम्परागत विधि से मत्स्य पालन में 3 से 4 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेअर प्रति वर्ष का उत्पादन प्राप्त होता है। संदर्भित मत्स्य पालकों द्वारा उन्नत तकनीकी का प्रयोग किया गया, जिसमें मुख्यतः मछलियों को फार्मूलेटेड (सूत्रित) आहार एवं जल व्यवस्था को अनुकूलतम बनाकर 9.5 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेअर की उत्पादकता प्राप्त कर प्रदेश में कीर्तिमान स्थापित किया गया है। मत्स्य पालकों द्वारा विदेशी प्रजाति, पंगेशियस का 3 एकड़ क्षेत्रफल में पालन कर 25 मीट्रिक टन प्रति एकड़ प्रति वर्ष का औसत उत्पादन सफलता पूर्वक प्राप्त किया गया। ग्रामीण तालाबों से प्राप्त मत्स्य उत्पादकता का यह कीर्तिमान राज्य एवं केन्द्रीय संस्थाओं द्वारा मान्य करते हुए इस उपलब्धि को पुरस्कृत किया

गया, जिसमें मुख्यतः भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की विभिन्न संस्थायें एवं जनपद बाराबंकी प्रशासन एवं राज्य स्तरीय स्वायत्तशाषी संस्थायें हैं।

## नवीनतम उपलब्धि

प्रारम्भिक सफलता से उत्साहित होकर मत्स्य पालकों द्वारा रिसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (RAS) की स्थापना एक एकड़ भूमि पर की गयी है। आर0ए0एस0 विधि के अन्तर्गत भूमि एवं जल का न्यूनतम उपभोग कर सघन मत्स्य पालन किया जाता है। लघु आकार के पक्के तालाबों का निर्माण एक श्रंखला के रूप में कर एक ओर से पानी का बहाव किया जाता हैं। इस प्रकार भूमि एवं जल की न्यूनतम आवश्यकता होती हैं परन्तु उत्पादन लागत/लाभ का अनुपात परम्परागत तालाबों के सापेक्ष कई गुना अधिक होता है।

## वर्तमान उद्यम का विवरण

(1) स्थल : ग्राम मिश्रीपुर, वि0ख0– जाँहगीराबाद, जनपद– बाराबंकी
(2) कुल भूमि क्षेत्रफल : 1.0 हेक्टेअर
(3) कुल निर्मित पक्के तालाब : 38 (625 वर्ग फिट/तालाब)
(4) पक्के तालाबों का कुल क्षेत्रफल : 23,750 (तेईस हजार सात सौ पचास) वर्ग फिट
(5) जल स्रोत : नलकूप
(6) संचय की गयी मत्स्य प्रजाति : पंगेशियस
(7) संचित मछलियों का घनत्व : 100 मछली प्रति क्यूबिक मीटर (12 लाख मछली/हेक्टेअर)
(8) कुल उत्पादित मत्स्य : 110 मीट्रिक टन/वर्ष

## विशेषता

आर0ए0एस0 (Recirculatory Aquaculture System) विश्व स्तर पर विकसित नवीनतम तकनीक है, जिसका प्रचलन विकसित देशों में सार्वलोकित है। अभी तक भारत में इस तकनीक का प्रचलन न्यूनतम है। उत्तर प्रदेश में प्रथम बार किसी मत्स्य पालक द्वारा यह प्रयास कर मत्स्य उत्पादन में उत्साहजनक सफलता प्राप्त की गयी है। उत्तर प्रदेश/भारत में इस विधि से मत्स्य पालन का अनूठा कीर्तिमान है। इस तकनीक के अंगीकरण से उत्तर प्रदेश को देश में मत्स्य पालन में अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, जिसका श्रेय उक्त मत्स्य पालकों को है। RAS तकनीक के प्रचलन से प्रदेश में मत्स्य व्यवसाय के क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव सुनिश्चित है। उल्लेखनीय है कि इस

तकनीक के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलन से लघु कृषकों को आय के उचित अवसर प्राप्त होंगे। साथ ही प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं न्यूनतम दोहन सुनिश्चित होगा। भविष्य में यह विधि न केवल भोज्य पदार्थों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करेगी बल्कि पारस्थित के रख–रखाव में भी अमूल्य योगदान देगी।

# मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

# अभिनव तकनीक से मत्स्य पालन में अनूठी सफलता

**मत्स्य पालक का नाम :** श्री साबिर हुसैन

**स्थान :** ग्राम– धरमपुर, पोस्ट– भिटौली बाजार, जनपद– महराजगंज।

**तकनीकी सहयोग :–** मत्स्य विभाग, उ0प्र0 एवं राष्ट्रीय मत्स्य अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।

## पृष्ठभूमि

श्री साबिर हुसैन, द्वारा लगभग 2.0 हेक्टेअर भूमि पर समन्वित मत्स्य पालन का कार्य उत्कृष्ट तकनीक विधियों से किया जा रहा है। निजी भूमि पर मत्स्य पालन के समग्र विकास हेतु तालाबों का निर्माण एवं अन्य अवस्थापनायें विकसित कर मत्स्य बीज उत्पादन, मत्स्य पालन एवं बागवानी का कार्य किया जा रहा है। मत्स्य उत्पादन के साथ ही श्री हुसैन द्वारा मत्स्य पालन में प्रयुक्त निवेशों का उत्पादन भी किया जाता है। उत्पादों का समुचित मूल्य प्राप्त करने हेतु स्वयं की विपणन व्यवस्था विकसित की गई है। गोरखपुर मण्डल के स्थानीय मत्स्य पालकों को लाभान्वित किये जाने हेतु तकनीकी स्थानान्तरण में भी सक्रिय भूमिका निभायी जा रही है।

## मुख्य उपलब्धियाँ

(1) मत्स्य बीज उत्पादन : मत्स्य पालक द्वारा भारतीय प्रजाति की मत्स्य प्रजातियां यथा कतला, रोहू, नैन एवं विदेशी प्रजाति की कॉमन, कार्प, ग्रास कार्प एवं सिल्वर कार्प का प्रजनन कराकर मत्स्य बीज उत्पादन उच्च तकनीकी का प्रयोग कर गत वर्षों से किया जा रहा है। मत्स्य पालक ने मत्स्य बीज उत्पादन हेतु आधुनिक हैचरी स्थापित की है। जिससे लगभग 4433.00 लाख स्पान प्रति वर्ष उत्पादित किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि भारतीय प्रजाति की मछलियाँ मुख्यतयः मानसून सीज़न में एक बार प्रजनन करती हैं परन्तु मत्स्य पालक द्वारा विभिन्न प्रकार के स्थानीय परिवर्तन कर उक्त प्रजातियों की Multiple breeding एवं मानसून पीरियड के अतिरिक्त समय में भी प्राप्त की गयी है जोकि भारत में सामान्यतः नही प्राप्त की जा सकी है। विगत तीन वर्षों में श्री साबिर हुसैन द्वारा अपने हैचरी से निम्न प्रकार मत्स्य बीज का उत्पादन किया गया–

| प्रजातिवार स्पान उत्पादन का विवरण | संख्या (लाख में) |
|---|---|

| वर्ष | भाकुर | रोहू | नैन | ग्रास कार्प | सिल्वर कार्प | कामन कार्प | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2012–13 | 650 | 400 | 375 | 1200 | 900 | 500 | 4025 |
| 2013–14 | 700 | 500 | 450 | 1330 | 1100 | 300 | 4380 |
| 2014–15 | 720 | 480 | 576 | 1440 | 864 | 480 | 4580 |
| 2015–16 | 600 | 550 | 300 | 1800 | 1000 | 500 | 4750 |
| | | | | | | | |

**प्रजातिवार फ्राई, फिंगरलिंग, इयरलिंग उत्पादन** **संख्या (लाख में)**

| वर्ष | फ्राई | फिंगरलिंग | इयरलिंग |
|---|---|---|---|
| 2012–13 | 35 | 18 | 0.50 |
| 2013–14 | 40 | 24 | 1.92 |
| 2014–15 | 41 | 21 | 0.75 |
| 2015–16 | 38 | 05 | 0.25 |

(2) स्टन्टेड अंगुलिकाओं (stunted yearling) का उत्पादन : उत्तर प्रदेश/भारत में सामान्यतः पारम्परिक रूप से लगभग दो माह आयु की अंगुलिकायें तालाबों में संचित की जाती है। नयी तकनीकी के अन्तर्गत यदि अंगुलिकाओं को उच्च घनत्व पर छोटे तालाबों में संचित रखा जाए तो उनकी बढ़त रूक जाती है परन्तु जीवित रहती है, इस प्रकार प्राप्त अंगुलिकायें यदि दूसरे वर्ष मानसून सीज़न में तालाबों में संचित की जाये तो यह अपनी आयु के सापेक्ष भार/साइज़ बहुत कम समय में प्राप्त कर लेती है। इस तकनीकी से अंगुलिकायें प्राप्त करने में बहुत कम लागत आती है परन्तु अंतिम उत्पादन सामान्य स्तर का ही प्राप्त हो जाता है। भारतीय अनुसंधान परिषद द्वारा अनुशंसित इस विधि का मत्स्य पालक द्वारा अनुश्रवण कर मत्स्य उत्पादन प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की गयी। मत्स्य पालक के स्तर पर यह अनूठा प्रयास था जोकि एक सराहनीय उपलब्धि है।

(3) फिश फीड (मत्स्य पूरक आहार) मिल की स्थापनाः– प्रदेश में सामान्यतः तालाबों में मत्स्य पालकों द्वारा मछलियों को पूरक आहार नहीं दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप औसत उत्पादकता कम रहती है। पूरक आहार न दिये जाने का कारण इसकी क्षेत्रीय स्तर पर अनुपलब्धता की है। मत्स्य पालक द्वारा मत्स्य विभाग के सहयोग से 100–125 मैट्रिक टन की उपलब्धता का फीड मिल स्थापित किया गया है, जिसके निरन्तर उत्पादन हो रहा है तथा क्षेत्रीय मत्स्य पालकों को उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। निजी क्षेत्र में मत्स्य पालक स्तर पर यह प्रथम प्रयास भी अत्यन्त सफल रहा है, जिसके मत्स्य उत्पादकता वृद्धि में दूरगामी प्रभाव सुनिश्चित है।

(4) फिश शॉप (मत्स्य विपणन व्यवस्था):– मत्स्य पालक द्वारा मत्स्य कोपी व्यक्तियों को उच्च कोटि की मछली उपलब्ध कराये जाने की दृष्टि से अपने फार्म पर दुकान स्थापित की गयी है जहाँ पर जीवित एवं संरक्षित मछलियों की बिक्री की जाती है। उक्त दुकान से मत्स्य पालक द्वारा मत्स्य बीज, पूरक आहार, प्रयुक्त होने वाली दवाइयों इत्यादि की बिक्री की जाती है, जिससे स्थानीय मत्स्य पालकों को मत्स्य व्यवसाय से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री एवं स्थल पर उपलब्ध रहती है। उक्त प्रयास से क्षेत्र में मत्स्य पालन के विकास की महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जा रही है।

(5) मत्स्य प्रशिक्षण केन्द्रः– मत्स्य पालक द्वारा स्वयं अपनायी जा रही विभिन्न तकनीकों का प्रचार–प्रसार किये जाने की प्रकिया अपनायी गयी है। उक्त सुविधा का लाभ मत्स्य विभाग द्वारा एवं निजी मत्स्य पालकों द्वारा किया जाता है। इस अनूठे प्रयास से ग्रामीण मत्स्य पालकों को अत्यन्त लाभ हुआ है।

श्री साबिर हुसैन के अथक प्रयासों ने क्षेत्र में मत्स्य पालन व्यवसाय को लाभकारी व्यवसाय के रूप में स्थापित किया है। सम्पूर्ण क्षेत्र के लोग अब इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुए हैं तथा वैज्ञानिकों द्वारा प्रचलित विधियों को अपना रहे हैं। इस प्रकार श्री साबिर हुसैन को अनुसरणीय व्यवसायी माना जा सकता है।

Aqua Feeds
Hossain Enterprise

# मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

# अभिनव तकनीक से मत्स्य पालन में अनूठी सफलता

**मत्स्य पालक का नाम :** **श्री तौफीक अहमद पुत्र स्व0 श्री मक्का**

**स्थान :** शीतलगंज, तहसील–पुरवा, जनपद– उन्नाव।

**तकनीकी सहयोग :** मत्स्य विभाग, उ0प्र0।

## पृष्ठभूमि

श्री तौफीक अहमद उन्नाव जिले के पुरवा ग्राम उ0 प्र0 के निवासी हैं। वह एक गरीब परिवार से थे। इनका बचपन अभाव एवं कठिनाइयों से परिपूर्ण था। इन्हें विरासत में कच्चा मकान मिला था। वर्ष 1986 में मत्स्य विभाग के सम्पर्क में आने के उपरान्त विभाग से तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त कर मत्स्य पालन का कार्य छोटे स्तर से शुरू किया। धीरे–धीरे मत्स्य पालन की गतिविधियों का विस्तार किया तथा अब यहां प्रमुख मत्स्य बीज के उत्पादकर्ता एवं आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थापित हैं। श्री तौफीक अहमद द्वारा आज मत्स्य बीज आपूर्ति उ0प्र0 के उन्नाव जिला के अतिरिक्त लखनऊ, बाराबंकी, सीतापुर, रायबरेली, कानपुर आदि जनपदों में किया जाता है। उक्त कार्य में लगभग 20 लोगों को इन्होंने अपने यहां नियमित रोजगार पर लगा रखा है। इसके अतिरिक्त मत्स्य विभाग से अनुदान प्राप्त कर अपने यहां फिश फीड मिल में स्थापित कर मत्स्य पूरक आहार के उत्पादन का कार्य ही इनके द्वारा किया जा रहा है। साथ ही राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से सहायता प्राप्त कर इन्होंने हैचरी परिक्षेत्र में ही रंगीन मछलियों के उत्पादन हेतु बैकयार्ड हैचरी की स्थापना की हुयी है। उपरोक्तानुसार मत्स्य पालन के विभिन्न इकाइयों के विकास में इनकी मेहनत एवं लगन ने श्री तौफीक अहमद की निशिचित रूप से प्रगतिशील मत्स्य पालक के रूप में भूमिका दृष्टिगोचर होती है।

## मुख्य उपलब्धियाँ

(1) **मत्स्य बीज उत्पादन** : मत्स्य पालक द्वारा भारतीय प्रजाति की मत्स्य प्रजातियां यथा कतला, रोहू, नैन एवं विदेशी प्रजाति की कॉमन, कार्प, ग्रास कार्प एवं सिल्वर कार्प का प्रजनन कराकर मत्स्य बीज उत्पादन उच्च तकनीकी का प्रयोग कर गत वर्षों से किया जा रहा है। मत्स्य पालक ने मत्स्य बीज उत्पादन हेतु आधुनिक हैचरी स्थापित की है। जिससे लगभग 4066.00 लाख स्पान प्रति वर्ष उत्पादित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि भारतीय प्रजाति की मछलियाँ मुख्यतयः मानसून सीज़न में एक बार प्रजनन करती हैं परन्तु मत्स्य पालक द्वारा विभिन्न प्रकार के स्थानीय परिवर्तन कर उक्त प्रजातियों की Multiple breeding एवं मानसून पीरियड के अतिरिक्त समय में भी प्राप्त की गयी है जोकि भारत में सामान्यतः नही प्राप्त की जा सकी है। विगत तीन वर्षों में श्री तौफीक अहमद द्वारा अधोलिखित विवरण अनुसार स्थापित राइनी मत्स्य बीज विकास हैचरी, शीतलगंज, पुरवा, उन्नाव से निम्न प्रकार मत्स्य बीज का उत्पादन किया गया–

## श्री राइनी मत्स्य बीज विकास हैचरी, शीतलगंज, पुरवा, उन्नाव

(यह हैचरी पुरवा मौरावा रोड शीतलगंज मं स्थापित है)

1– निर्माण कक्ष : एक कमरा व एक बरामदा (वर्ष 2005–06)

2– हैचरी का कुल क्षेत्रफल (हे0): 2.500

3– तालाबों की कुल संख्या :

(क) नर्सरी पॉण्ड : 17

(ख) ब्रूडर पॉण्ड : 3

4– हैचरी निर्माण कार्य :

(क) पानी की टंकी : (25000–30000 लीटर)

(ख) स्टाकिंग टैंक : 3

(ग) हैचिंग टैंक : 10

5– बोरिंग शैलो : 4

6– डीजल इंजन : 6

**मत्स्य स्पान उत्पादन एवं मत्स्य बीज उत्पादन से प्राप्त आय संख्या (लाख में)**

| वर्ष | मत्स्य स्पान उत्पादन | मत्स्य बीज उत्पादन | कुल आय |
|---|---|---|---|
| 2013–14 | 4000 | 50 | 28.0 |
| 2014–15 | 4200 | 52 | 29.35 |
| 2015–16 | 4000 | 51 | 28.10 |

**प्रजातिवार स्पान उत्पादन का विवरण संख्या (लाख में)**

| वर्ष | भाकुर | रोहू | नैन | ग्रास कार्प | सिल्वर कार्प | कामन कार्प | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2013–14 | 650 | 460 | 375 | 1105 | 810 | 600 | 4000 |
| 2014–15 | 725 | 480 | 380 | 1130 | 860 | 625 | 4200 |
| 2015–16 | 625 | 470 | 385 | 1110 | 820 | 610 | 4000 |

फ्राई, फिंगरलिंग, इयरलिंग उत्पादन संख्या (लाख में)

| वर्ष | फ्राई | फिंगरलिंग | इयरलिंग |
|---|---|---|---|
| 2013–14 | 198 | 91 | 2.78 |
| 2014–15 | 193 | 91 | 2.78 |
| 2015–16 | 200 | 91 | 2.73 |

(2) **स्टन्टेड अंगुलिकाओं (stunted yearling) का उत्पादन :** उत्तर प्रदेश/भारत में सामान्यतः पारम्परिक रूप से लगभग दो माह आयु की अंगुलिकायें तालाबों में संचित की जाती है। नयी तकनीकी के अन्तर्गत यदि अंगुलिकाओं को उच्च घनत्व पर छोटे तालाबों में संचित रखा जाए तो उनकी बढ़त रूक जाती है परन्तु जीवित रहती है, इस प्रकार प्राप्त अंगुलिकायें यदि दूसरे वर्ष मानसून सीज़न में तालाबों में संचित की जाये तो यह अपनी आयु के सापेक्ष भार/साइज़ बहुत कम समय में प्राप्त कर लेती है। इस तकनीकी से अंगुलिकायें प्राप्त करने में बहुत कम लागत आती है परन्तु अंतिम उत्पादन सामान्य स्तर का ही प्राप्त हो जाता है। भारतीय अनुसंधान परिषद द्वारा अनुशंसित इस विधि का मत्स्य पालक द्वारा अनुश्रवण कर मत्स्य उत्पादन प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की गयी। मत्स्य पालक के स्तर पर यह अनूठा प्रयास था जोकि एक सराहनीय उपलब्धि है।

(3) **फिश फीड (मत्स्य पूरक आहार) मिल की स्थापनाः–** प्रदेश में सामान्यतः तालाबों में मत्स्य पालकों द्वारा मछलियों को पूरक आहार नहीं दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप औसत उत्पादकता कम रहती है। पूरक आहार न दिये जाने का कारण इसकी क्षेत्रीय स्तर पर अनुपलब्धता की है। मत्स्य पालक द्वारा मत्स्य विभाग के सहयोग से 100–125 मैट्रिक टन की उपलब्धता का फीड मिल स्थापित किया गया है, जिसके निरन्तर उत्पादन हो रहा है तथा क्षेत्रीय मत्स्य पालकों को उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। निजी क्षेत्र में मत्स्य पालक स्तर पर यह प्रथम प्रयास भी अत्यन्त सफल रहा है, जिसके मत्स्य उत्पादकता वृद्धि में दूरगामी प्रभाव सुनिश्चित है।

(4) **स्वयं की मत्स्य सम्पदाः**– मत्स्य पालन के व्यवसाय से अर्जित आय के फलस्वरूप अब यह नर्सरी व ब्रूडर पॉण्ड के 20 तालाबों के अतिरिक्त 1.5 हे0 के 2 निजी तालाबों में जिनमें, इनके द्वारा आधुनिक तकनीकी से वृहद स्तर पर मत्स्य उत्पादन का कार्य भी किया जा रहा है, के स्वामी हैं। जिसकी लागत लगभग रू0 100.00 लाख है तथा इनके पास तालाब

के किनारे एक पक्का मकान है, जिसकी कीमत लगभग रू0 30.00 लाख है तथा मकान के सामने ही फीड मिल स्थापित कर रखा है, जिसकी कीमत लगभग रू0 10.00 लाख है।

इसके अतिरिक्त तौफीक अहमद के पास वर्तमान में स्वयं की एक जीप व एक बुलेरो वाहन भी है। यह सब श्री तौफीक अहमद के मत्स्य पालन व्यवसाय अपनाने से सम्भव हो सका है। श्री तौफीक अहमद के अथक प्रयासों ने क्षेत्र में मत्स्य पालन व्यवसाय को लाभकारी व्यवसाय के रूप में स्थापित किया है। सम्पूर्ण क्षेत्र के लोग अब इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुए हैं तथा वैज्ञानिकों द्वारा प्रचलित विधियों को अपना रहे हैं। इस प्रकार श्री तौफीक अहमद को अनुसरणीय व्यवसायी माना जा सकता है।मत्स्य विभाग से तकनीकी मार्ग दर्शन प्राप्त कर श्री तौफीक अहमद अपनी मेहनत, लगन, परिश्रम से सफलता के उच्च आयाम हासिल का सफल कार्यकर खुशहाल जिन्दगी जी रहे हैं।

(5) **मत्स्य तकनीकों का प्रचार–प्रसार** :– मत्स्य पालक द्वारा स्वयं अपनायी जा रही विभिन्न तकनीकों का प्रचार–प्रसार किये जाने की प्रक्रिया अपनायी गयी है। उक्त सुविधा का लाभ मत्स्य विभाग द्वारा एवं निजी मत्स्य पालकों द्वारा किया जाता है। इस अनूठे प्रयास से ग्रामीण मत्स्य पालकों को अत्यन्त लाभ हुआ है।

**विशेष–** श्री तौफीक अहमद द्वारा राष्ट्रीष्य मात्सिकी विकास बोर्ड योजनान्तर्गत स्थापित बैकयार्ड यूनिट हैचरी रंगीन मछलियों के उत्पादन हेतु प्रदेश में स्थापित इस प्रकार की मात्र कुछ हैचरियों में से एक है। रंगीन मछलियों के प्रदेश में उत्पादन की दिशा में यह विशेष अनुकरणीय प्रयास है।